समास

परिभाषा-

*दो या अधिक शब्दों के योग को समास कहते हैं।

*कामताप्रसाद गुरु-

जब दो या अधिक शब्द अपने संबंधी शब्दों को छोड़कर एक साथ मिल जाते हैं,तब उनके मेल को समास कहते हैं।

*उमेशचन्द्र शुक्ल-

दो अथवा दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं।

जैसे-सीतापति(सीता का पति)

समास के छः प्रकार हैं-

(1)अव्ययीभाव समास (2)तत्पुरुष समास (3)कर्मधारय समास (4)बहुव्रीहि समास (5) द्विगु (6) द्वन्द्व समास

अव्ययी भाव-इसमें पहला शब्द प्रधान होता है और समस्त शब्द क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

जैसे-यथासंभव

प्रतिदिन

भरपेट आदि में पहला पद अव्यय जाति का प्रधान।

तत्पुरुष समास- अंतिम पद प्रधान,पहला पद दूसरे पद के साथ किसी विभक्ति द्वारा जुड़ा रहता है।

जैसे-राजपुरुष (राजा का पुरुष)

इसके दो प्रकार है-

(क)व्यधिकरण तत्पुरुष और समानाधिकरण तत्पुरुष

(क)व्यधिकरण तत्पुरुष-जो विभक्ति लोप से बने तत्पुरुष समास को व्यधिकरण तत्पुरुष कहा जाता है।

(ख)समानाधिकरण तत्पुरुष-जो विभक्ति योग से बने ऐसे समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहा जाता है।
जैसे-देशभक्ति(देश की भक्ति)
समानाधिकरण तत्पुरुष के छः कारक विभक्ति के अनुसार छः भेद होते हैं।

कर्म तत्पुरुष- स्वर्गप्राप्त (स्वर्ग को प्राप्त)
करण तत्पुरुष- मोहांध (मोह से अंध)
संप्रदान तत्पुरुष- रसोई घर (रसोई के लिए घर)
अपादान तत्पुरुष- कामचोर (काम से चोर)
संबंध तत्पुरुष- गृहस्वामी (गृह का स्वामी)
अधिकरण तत्पुरुष- पुरुषोत्तम (पुरुषों में उत्तम)

(3)बहुव्रीहि समास-इसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद मिलकर किसी दूसरे पद की विशेषता बताता है।
जैसे-पीताम्बर-(पीत है अंबर जिसका वह) -कृष्ण
लंबोदर (लंबा है उदर जिसका वह)-गणेश

(4) कर्मधारय समास-जिस समास में पहला पद विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है तथा प्रधान होता है।
जैसे-नीलगाय - नीली है जो गाय
कर्मधारय समास के दो प्रकार हैं-
(अ) विशेषतावाचक कर्मधारय-जिस समास से विशेष-विशेषण का भाव सूचित होता है, उसे विशेषतावाचक कर्मधारय कहते हैं। पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। जैसे- नीलगाय - नीली है जो गाय
महापुरुष- महान है जो पुरुष
(ब)उपमावाचक कर्मधारय-जिस समास से उपमेय,उपमान का भाव सूचित होता है उसे उपमावाचक कर्मधारय कहते हैं।
जैसे- कमलनयन- कमल जैसे नयन
भवसागर- भव रूपी सागर
(5)द्विगु-जिस समास में पहला पद संख्यावाचक हो और समस्त शब्द समुदाय बोधक हो जाता है।

जैसे-त्रिभुवन त्रि+ भुवन
इसके दो भेद हैं- समाहार द्विगु तथा उत्तरपदप्रधान द्विगु
समाहार द्विगु- समाहार का अर्थ है-समुदाय।
जैसे-त्रिभुवन त्रि+ भुवन अथवा नवरात्री
उत्तरपदप्रधान द्विगु-उत्तरपदप्रधान का अर्थ होता है-अंतिम पद
जैसे-दो माँ का-दुमाता
(6)द्वन्द्व समास- जिस समास में सभी पद प्रधान होते हैं,उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।जैसे-भला-बुरा(भला या बुरा)
इसके तीन प्रकार हैं-
(अ)इतरेतर द्वन्द्व समास-और शब्द से जुड़े पज वाले समास को इतरेतर समास द्वन्द्व कहते हैं।
जैसे- राम- लक्ष्मण,रात-दिन आदि।
(ब)समाहार द्वन्द्व -जिस द्वन्द्व समास में अन्य पद छिपे रहते हैं और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते हैं, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। जैसे-हाथ-पाँव,घर-द्वार आदि।

वैकल्पिक द्वन्द्व समास-जिस समास में विकल्पसूचक शब्द छिपा हो,उसे वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं।
जैसे-भला-बुरा,पाप-पुण्य आदि।